एकता का पहिया

‘‘मिल–जुलकर चलें, मिल–जुलकर बढेंगें’’

न्यायाधीश नगेन्द्र कुमार जैन
(पूर्व मुख्य न्यायाधिपति मद्रास एवं कर्नाटक उच्च न्यायालय)

‘‘अकेला व्यक्ति एक प्रयास कर सकता है, लेकिन सामूहिक प्रयास असंभव को भी संभव बना सकता है।’’

प्रकृति का अनमोल संदेशः

प्रकृति हमें हर पल एकता, सहयोग और सामंजस्य का संदेश देती है।

आकाश में उड़ते पक्षियों का समूह, एक साथ बहती नदियाँ, मधुमक्खियों का छत्ता और चीटियों की कतारें हमें सिखाती है कि मिल–जुलकर काम करने में कितनी अद्‌भुत शक्ति होती है। संसार में कोई भी व्यक्ति पूर्णतः आत्म–निर्भर नहीं है। हमारे जीवन की प्रत्येक छोटी–बड़ी आवश्यकता किसी न किसी रूप में दूसरों के सहयोग से पूरी होती है।

एक छोटा–सा चित्र भी कभी–कभी जीवन का बहुत बड़ा सत्य समझा देता है। साईकिल के पहिए में लगी पतली–पतली तीलियाँ देखने में साधारण और कमजोर लगती हैं, लेकिन जब वे सभी तीलियाँ एक साथ जुड़कर काम करती है, तो पहिए को मजबूती और संतुलन प्रदान करती है। यदि एक–दूसरे से जुड़ी ये तीलियाँ अपना–अपना काम करना छोड़ दे, तो पहिया अपना संतुलन खो सकता है।

यही जीवन का मूल मंत्र है– व्यक्ति की वास्तविक शक्ति केवल उसकी व्यक्तिगत क्षमता में नहीं, बल्कि दूसरों के साथ मिलकर काम करने की उसकी भावना में भी निहित होती है।

प्रत्येक व्यक्ति महत्वपूर्ण है :

समाज में कोई व्यक्ति बड़ा है, कोई छोटा, कोई धनवान है, कोई साधनहीन, कोई अधिक शिक्षित है, तो कोई कम पढ़ा–लिखा। लेकिन

इन भिन्नताओं के आधार पर किसी के महत्व को कम नहीं आँका जा सकता ।

एक विशाल भवन के निर्माण में वास्तुकार की भूमिका महत्वपूर्ण है, तो मजदूर के श्रम का भी उतना ही योगदान है। चिकित्सक जीवन बचाता है, किसान अन्न उगाता है, सफाईकर्मी स्वच्छता बनाए रखता है और शिक्षक भविष्य का निर्माण करता है। इनमें से किसी एक के योगदान को नगण्य नहीं कहा जा सकता।

इसी प्रकार परिवार में माता–पिता का अनुभव, क्च्चो की ऊर्जा, बुजुर्गो का मार्गदर्शन और युवाओं का परिश्रम मिलकर परिवार को सशक्त बनाते हैं। हमें कभी यह नहीं सोचना चाहिए कि हमारे बिना काम नहीं हो सकता, और न ही किसी दूसरे व्यक्ति को यह समझना चाहिए कि उसके योगदान का कोई महत्व नहीं है। जिस दिन हम प्रत्येक व्यक्ति के सम्मान और योगदान को स्वीकार करना सीख आएंगे, उसी दिन सहयोगपूर्ण समाज की नींव मजबूत होने लगेगी ।

एकता में अनेक गुना शक्ति होती हैः

एक प्रसिद्ध कहावत है– ‘‘एक और एक ग्यारह होते हैं।’’ इसका अर्थ केवल गणितीय संख्या नहीं, बल्कि सामूहिक प्रमास की शक्ति है। एक व्यक्ति अकेले किसी भारी वस्तु को उठाने में असमर्थ हो सकता है, लेकिन चार व्यक्ति मिलकर उसे आसानी से उठा सकते है। अकेला किसान बड़े खेत की देखभाल में कठिनाई अनुभव कर सकता है, लेकिन परिवार और समुदाय का सहयोग उसके श्रम को सरल बना सकता है।

जब किसी गाँव में बाढ़ आती है, आग लगती है या अन्य होता है, तब लोगों का आपसी सहयोग ही राहत और पुनर्निर्माण का मार्ग प्रशस्त करना है। कोई संकट उत्पन्न राष्ट्र निर्माण में भी यही सिद्धांत लागू होता है। वैज्ञानिक, सैनिक, किसान, श्रमिक, शिक्षक, व्यापारी और प्रशासनिक कर्मचारी–सभी अपने–अपने क्षेत्र में योगदान देते हैं। इनके सामूहिक प्रयासों से ही राष्ट्र प्रगति करता है। इसलिए हमें यह समझना होगा कि सफलता केवल व्यक्तिगत प्रतिभा का परिणाम नहीं होती, वहा परस्पर विश्वास, सामू हिक प्रयास और साझा जिम्मेदारी का भी फल होती है।

मतभेद हों, मनभेद नहींः

मिलजुल कर काम करने का अर्थ यह नहीं कि सभी व्यक्तियों के विचार एक जैसे हो। प्रत्येक व्यक्ति की सोच, अनुभव और कार्य करने का तरीका अलग हो सकता है। मतभेद होना स्वाभाविक है, लेकिन मतभेदों को मनभेद में बदल देना दुर्भाग्यपूर्ण है। परिवारों में संपत्ति, जिम्मेदारियों, खर्चों और निर्णयों को लेकर मतभेद हो सकते हैं। कार्यालयों में कार्यप्रणाली को लेकर अलग–अलग विचार सामने आ सकते हैं। सामाजिक संस्थाओं में भी निर्णयों पर असहमति हो सकती है।

ऐसी परिस्थितियों में आवश्यक है कि हम दूसरों की बात धैर्यपूर्वक सुनें, उनके दृष्टिकोण को समझें और व्यक्तिगत अहंकार से ऊपर उठकर समाधान खोजें। हर बार अपनी बात मनवा लेना बुद्धिमानी नहीं है। कभी–कभी दूसरों की उचित बात स्वीकार कर लेना भी परिपक्वता का परिचायक होता है।

जहाँ अहंकार प्रधान होता है, वहाँ संबंध कमजोर होते हैं, जहाँ संवाद और सम्मान प्रधान होते हैं, वहाँ सहयोग के नए रास्ते खुलते है।

परिवार में सहयोगः सुखी जीवन का आधार :

परिवार समाज की सबसे छोटी, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण इकाई है। परिवार की वास्तविक समृद्धि केवल धन, मकान, वाहन या संपत्ति से नहीं मापी जाती। उसका वास्तविक वैभव प्रेग, विश्वास, सम्मान और एक–दूसरे के प्रति जिम्मेदारी में दिखाई देता है। यदि परिवार का एक सदस्य सभी जिम्मेदारियाँ उठाता रहे और अन्य सदस्य अपनी जिम्मेदारियों से विमुख रहे, तो धीरे–धीरे उसके मन में थकान, निराशा और उपेक्षा का भाव उत्पन्न हो सकता है। इसके विपरीत, जब परिवार के सदस्य एक–दूसरे की कठिनाइयों को समझते हैं, काम बाँटते हैं और आवश्यकता के समय आगे आते हैं, तो कठिन परिस्थितियाँ भी सहनीय बन जाती है।

बुजुर्गो की सेवा, बच्चों की शिक्षा, बीमारी में देखभाल और आर्थिक संकट में सहयोग– ये केवल किसी एक सदस्य के कर्तव्य नहीं, बनिक पारिवारिक संवेदनशीलता और सामर्थ्य के अनुसार साझा जिम्मेदारियाँ है। सच्चा परिवार नहीं है, जहाँ किसी एक की परेशानी को केवल उसकी

व्यक्तिगत समस्या न समझकर सब मिलकर उसका समाधान खोजने का प्रयास करें। हमें यह भी याद रखना चाहिए कि सहयोग का अर्थ केवल आर्थिक सहायता देना नहीं है। समय देना, किसी की बात सुनना, बीमारी में साथ रहना, जिम्मेदारी और मानसिक संबल प्रदान करना भी सहयोग के महत्वपूर्ण रूप है।

समाज में सहयोग से ही परिवर्तन संभव है

हम अक्सर समाज की समस्याओं पर चर्चा करते हैं– गंदगी, पर्यावरण प्रदूषण, अशिक्षा, बेरोजगारी, बुजुर्गो की उपेक्षा और सामाजिक असमानता लेकिन केवल समस्याओं की आलोचना करने से उनका समाधान नहीं होता। यदि प्रत्येक व्यक्ति यह संकल्प लें कि वह अपने आसपास की एक समस्या को दूर करने में योगदान देगा, तो धीरे–धीरे व्यापक परिवर्तन संभव है। कोई व्यक्ति बच्चों को निःशुल्क शिक्षा दे सकता है, कोई जरूरतमंदों की सहायत कर सकता है, कोई रक्तदान एक के लिए लोगों को प्रेरित कर सकता है और कोई पर्यावरण संरक्षण के लिए पौधे लगा सकता है।

सामाजिक संस्थाएँ, नागरिक समूह और जागरूक व्यक्ति मिलकर ऐसे कार्यों को अधिक प्रभावशाली बना सकते हैं। हमें यह नहीं सोचना चाहिए के मेरा छोरा–ता प्रयास क्या परिवर्तन लाएगा । इतिहास गवाह है कि बड़े परिवर्तन अनेक छोटे–छोटे प्रयासों के सम्मिलित परिणाम होते हैं।

बूंद–बूंद से सागर बनता है और व्यक्ति– व्यक्ति के सहयोग से सशक्त समाज का निर्माण होता है।

नेतृत्व का अर्थ आदेश देना नहीं, सबको साथ लेकर चलना हैः

एक अच्छे नेता की पहचान केवल उसके पद, अधिकार या प्रभाव से नहीं होती।उसकी वास्तविक पहचान इस बात से होती है ि कवह अपने साथियों की क्षमताओं को कितना पहचानता है, उनके विचारों को कितना महत्व देता है और कठिन समय में उनके साथ कितना खड़ा रहता हैं जो व्यक्ति दूसरों को कमजोर समझता है, उनकी उपेक्षा करता है और सारी उपलब्धियों का श्रेय स्वयं लेना चाहता है, वह लंबे समय तक विश्वास अर्जित नहीं कर सकता।

इसके विपरीत, श्रेष्ठ नेतृत्व वह है जो प्रत्येक व्यक्ति की योग्यता के अनुरूप अवसर प्रदान करें, गलतियों को सुधारने में मदद करें और सफलता का श्रेय कि पूरी टी को दे। एक कुशल माली की तरह नेता को भी यह समझना चाहिए कि बगीचे के सभी पौधे एक जैसे नहीं होते। किसी को अधिक धूप चाहिए किसी को अधिक पानी और किसी को विशेष देखभाल। फिर भी सभी मिलकर बगीचे की सुंदरता बढ़ाते है।

इसलिए सच्चा नेतृत्व दूसरों को छोटा दिखाने में नहीं, बल्कि उनकी क्षमताओं को विकसित करने में है।

सहयोग का अर्थ कमजोरी नहीं, परिपक्वता हैः

कुछ लोग यह मानते है कि दूसरों की सहायता माँगना कमजोरी का संकेत है। यह धारणा उचित नहीं है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है और जीवन के अलग–अलग चरणों में प्रत्येक व्यक्ति को दूसरों के सहयोग की आवश्यकता पड़ती हैं। कभी हम किसी की सहायता करते हैं, तो कभी हमें सहायता की जरूरत होती है। यही जीवन का स्वाभाविक चक्र है।

हालाँकि सहयोग का अर्थ यह भी नहीं कि हम अपनी पूरी जिम्मेदारी दूसरों पर डाल दें। सच्चा सहयोग तभी सार्थक होता है, जब प्रत्येक व्यक्ति अपनी क्षमता के अनुसार योगदान दे और दूसरों के योगदान का सम्मान करें। हमें आत्मनिर्भर भी बनना है और सहयोगी भी। अपने पैसे पर खड़े होने का प्रयास करना है, लेकिन जरूरतमंद के लिए सहारा बनने से पीछे नहीं हटना हैं आत्मनिर्भरता हमें सक्षम बनाती हैं और सहयोग हमें संवेदनशील, इन दोनों का संतुलन ही व्यक्तित्व को महान बनाता है।

आज के युग में सहयोग की आवश्यकता और भी अधिकः

आज विज्ञान, तकनीक और संचार के साधनों ने दूनिया को पहले से अधिक निकट ला दिया हैं फिर भी अनेक बाद व्यक्ति अकेलेपन, प्रतिस्पद्धा, अविश्वास और सम्बन्धों में दूरी का अनुभव करता हैं हम व्यक्तिगत सफलता की दौड़ में इतने व्यस्त हो जाते हैं कि दूसरों की कठिनाईयों पर ध्यान देना भुल जाते है। कभी–कभी हम किसी की असफलता पर प्रसन्न होते है और उसकी सफलता को अपनी चुनौती समझ बैठते है।

यह दृष्टिकोण समाज में अनावश्यक तनाव और विभाजन को जन्म देता है।

हमे प्रतिस्पर्द्धी के साथ सहयोग की भावना भी विकसित करनी चाहिए। दूसरो की सफलता से सीखना चाहिए, उनकी उपलब्धियों का सम्मान करना चाहिए और जहाँ संभव हो, उनकी प्रगति में योगदान देना चाहिए। किसी दूसरे त्यक्ति को आगे बढ़ाने से हमारा महत्व कम नहीं होता। बल्कि जब हम इस आगे बढ़ने का अवसर देते हैं, तो स्वयं भी एक बेहतर समाज के निर्माण में भागीदार बनते हैं।

सहयोग की शुरूआत स्वयं से करें–

दुनिया बदलने का संकल्प लेने से पहले हमें अपने व्यवहार में छोटे छोटे परिवर्तन करने होंगे।

- सम्मान दें– किसी व्यक्ति को उसके पद, धन या शिक्षा के आधार पर छोटा न समझे।
- धैर्यपूर्वक सुनें –दूसरों की बात समझे बिना निर्णय न लें।
- जिम्मेदारी बाँटे –परिवार और कार्यस्थल पर सारा बोझा एक ही व्यक्ति पर न छोड़े
- कृतज्ञता व्यक्त करें– किसी के छोटे– से सहयोग के लिए भी धन्यवाद करें।
- कठिन समय में साथ दें– केवल सफलता के समय नहीं, परेशानी में भी सहयोग करें।
- श्रेय साझा करें– सामूहिक सफलता का श्रेय सभी योगदानकर्ताओं को दें।
- अहंकार छोड़े –आवश्यकता पड़ने पर अपनी गलती स्वीकार करें और दूसरों से सहायता मांगने में संकोच न करें ।

इन सरल आदतों को जीवन में अपनाकर हम अपने परिवार, कार्यस्थल और समाज को अधिक सहयोगपूर्ण बना सकते हैं।

मिलकर चलने में ही जीवन की सार्थकता है –

साइकिल के पहिए की पतली–पतली तीलियाँ हमें जीवन का एक गहरा सत्य समझाती है। प्रत्येक तीली की अपनी जगह और अपनी भूमिका होती है। कोई भी तीली अकेले पूरे पहिए का कार्य नहीं कर सकती, लेकिन सभी तीलियाँ मिलकर पहिए को मजबूती और संतुलन प्रदान करती है। मनुष्य का जीवन भी कुछ ऐसा ही है। हमारी योग्यताएँ, विचार, अनुभव और क्षमताएं अलग–अलग हो

सकती है, लेकिन जब हम उन्हें एक श्रेष्ठ उद्देश्य के लिए जोडते हैं, तो हमारी सामूहिक शक्ति कई गुना बढ़ जाती हैं। आइए, हम ऐसा परिवार बनाएँ जहाँ जिम्मेदारियाँ बाँटी जाए, ऐसा समाज बनाएँ जहाँ हर व्यक्ति का सम्मान हो, ऐठी संस्था बनाएँ जहाँ सहयोग को प्रोत्साहन मिले और ऐसा राष्ट्र बनाएँ जहाँ व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठकर जनहित को महत्व दिया आए। याद रखिए, किसी को नीचे गिराकन ऊँचा उठना वास्तविक महानता नहीं है। वास्तविक महानता तो दूसरों को साथ लेकर बढ़ने में प्योंकि – ‘‘अकेले चलकर मंजिल तक पहुँचा आ सकता है, लेकिन मिलकर चलने जे मंजिलों का विस्तार किया जा सकता है। अकेले सफलता मिल सकती है, लेकिन सहयोग से सफलता को सार्थकता मिलती है।”

एकता हमारी शक्ति बने, सहयोग हमारी संस्कृति बनें और परस्पर सम्मान हमारे जीवन का आधार बनें– यही इस प्रेरणादायक संदेश की वास्तविक सीख है।

———